IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पारिस्थितिक नारीवाद का एक व्यापक विश्लेषण

Rekha

सारांश

पारिस्थितिक नारीवाद (Ecofeminism) आधुनिक युग की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जो कि पर्यावरणीय संकट और पितृसत्तात्मक संरचना के बीच अंतर संबंधों को प्रदर्शित करती है। यह एक अंत: विषय आलोचनात्मक सिद्धांत है जो दावा करता है कि पर्यावरण और महिलाओं के मुद्दे आपस में जुड़े हुए हैं क्योंकि पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं एवं प्रकृति को एक वस्तु के रूप में देखा जाता है और दोहन एवं शोषण किया जाता है(Öztürk,2020)। इस सिद्धांत के अनुसार, यह व्यवस्था एक पुरुष-केंद्रित पदानुक्रम प्रणाली और द्वंद्व का निर्माण करती है, जो समाज में असमानता पैदा करती है और साथ ही पुरुषों को श्रेष्ठता प्रदान करती है। दूसरी ओर, पदानुक्रम और द्वंद्व का उपयोग गैर-पुरुष प्राणियों पर दबाव डालने और उन्हें हाशिए पर डालने के लिए किया जाता है।यह अवधारणा बताती है कि जैसे समाज में समझा जाता है कि पुरुष स्त्री से श्रेष्ठ है, संस्कृति प्रकृति से श्रेष्ठ है, तर्क भावना से श्रेष्ठ है तो इसके साथ ही पुरुष को स्त्री से श्रेष्ठ माना जाता है। क्योंकि पुरुष को स्त्री से श्रेष्ठ माना जाता है और निम्न विशेषताएं स्त्री से जोड़ी जाती हैं। इसी तरह जहां पुरुष संस्कृति, चेतना, तर्क और आत्मा का प्रतीक है वही स्त्री प्रकृति, अवचेतन, भावना, और शरीर का प्रतिनिधित्व करती है। पुरुष प्रधान समाज में स्त्री और प्रकृति एक दूसरे के नजदीक आ जाते हैं क्योंकि उनकी अवधारणाएं भी समान होती हैं। जैसे कि जहां स्त्री प्रजनन द्वारा मनुष्य को संसार में लाती है, ठीक उसी तरह प्रकृति प्राकृतिक संसाधनों से पृथ्वी पर जीवन की निरंतरता को सुनिश्चित करती है। स्त्री एवं प्रकृति का आपस में बंधन जुड़ा हुआ है इसका कारण यह है की प्रकृति और स्त्री दोनों में प्रजनन और सृजन करने की क्षमता है। दोनों ही समझ में निष्क्रिय भूमिका निभाते हैं और वह दूसरे पर निर्भर भी होते हैं। उदाहरण के तौर पर महिलाओं को घर की चार दीवारी के अंदर घरेलू जीवन जीने के लिए मजबूर किया जाता है और वह अपनी प्रजनन क्षमता के कारण निष्क्रिय हो जाती हैं, वह अपनी आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं कर पाती और पुरुष प्रधान समाज में पुरुषों पर ही निर्भर हो जाती हैं। वहीं दूसरी और प्रकृति भी आंतरिक रूप से सक्रिय प्राणी नहीं है क्योंकि प्रकृति चल फिर नहीं सकती बोल नहीं सकती वह भी मनुष्यों पर निर्भर है और उसकी स्थिति भी पुरुषों पर ही निर्भर है। इस अवधारणा बताती है कि स्त्री और प्रकृति के बीच का बंधन फ्री की प्रजनन क्षमता को स्वभावी को बनता है एवं प्रकृति की उर्वरता को सत्तरीकृत करता है। महिलाएं अपनी जैविक संरचना के कारण घरेलू बनकर रह जाती हैं और समाज में पहचान प्राप्त नहीं कर पाती पुरुषों पर आजीवन निर्भर रहती हैं, महिलाएं समाज में वस्तुओं के रूप में विद्यमान है। वहीं दूसरी ओर पुरुष केंद्रित व्यवस्था में

प्रकृति अपनी उत्पादकता और उदारता के साथ एक मां की तरह पेश आती है और अपने संसाधनों से पितृसत्तात्मक व्यवस्था की सेवा करती है। यह व्यवस्था प्रकृति को एक ऐसी वस्तु के रूप में देखती है जो अपने अनंत संसाधनों, प्रचुरता और शक्ति प्रदान करती है। फल स्वरूप पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं और प्रकृति दोनों को ही एक वस्तु के रूप में देखा जाता है और उनका शोषण किया जाता है। यह व्यवस्था महिलाओं को समाज से बाहर करने के लिए प्रकृति के साथ उनकी निकटता को भी सामने रखती है। यह शोध-पत्र पारिस्थितिक नारीवाद के संकल्प,उत्पत्ति एवं विकास, मुख्य सैद्धांतिक अवधारणाएँ, आलोचनाएँ और भारतीय संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। परिणामस्वरूप, यह अध्ययन पारिस्थितिक नारीवादी सिद्धांत पर एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो इस बात की वकालत करता है कि पर्यावरण और महिलाओं के मुद्दे परस्पर जुड़े हुए हैं क्योंकि पुरुष-केंद्रित समाज में उनके साथ समान व्यवहार किया जाता है।

मुख्य शब्द: पारिस्थितिकी, नारीवाद, महिलाएँ, सामाजिक, दर्शन, समाज, वातावरण

भूमिका

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में पर्यावरण संकट ने पूरे विश्व का ध्यान अपनी ओर खींचा। वनों की कटाई प्रदूषण जलवायु परिवर्तन औद्योगीकरण एवं प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध शोषण मानवता के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह खड़े करने लगे तो इसी बीच नई वटी आंदोलन के भीतर यह भी विचार उभर कर सामने आया कि पर्यावरण और महिलाओं का शोषण एक दूसरे से गहरे तौर पर जुड़ा हुआ है इसी विचार को पारिस्थितिक नारीवाद कहा गया। पारिस्थितिक नारीवाद की अवधारणा यह मानती है कि पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने जहां स्त्रियों को हाशिए पर रखा वहीं दूसरी और प्रकृति को भी केवल उपभोग का साधन ही माना। जहां नारीवाद महिलाओं के लिए समान राजनीतिक एवं सामाजिक अधिकारों की स्थापना और रक्षा हेतु आंदोलन या विचारधाराओं का एक संग्रह है तो वहीं दूसरी ओर पारिस्थितिक नारीवाद उन आंदोलनों और दर्शनों का वर्णन करता है जो नारीवाद को पारिस्थितिकी से जोड़ता है।

पारिस्थितिक नारीवाद की परिभाषा एवं उत्पत्ति

अधिकांश नारी वादों की तरह, पारिस्थितिक नारीवाद भी पुरुष-पक्षपाती पितृसत्तात्मक उत्पीड़न की प्रणालियों का विखंडन करती है, यह अवधारणा पितृसत्तात्मक उत्पीड़न की आलोचना एवं उन्मूलन से संबंधित है। मुख्य तौर पर पारिस्थितिक नारीवाद का तर्क है कि उत्पीड़न की यह सारी संरचनाओं प्राकृतिक दुनिया को उन्हीं तंत्रों और तर्कों के माध्यम से अधीन करती हैं जिनसे वे महिलाओं को अधीन करती हैं। इन दोनों में समानता है। पारिस्थितिक नारीवाद जंगली स्थानों के क्षरण, जैव विविधता में गिरावट और पारिस्थितिक आपदाओं में वृद्धि को स्वाभाविक रूप से नारीवादी चिंताओं के रूप में देखता है(नेल्सन, 2024)।

आधुनिक पारिस्थितिक नारीवादी आंदोलन का जन्म 1970 के दशक के अंत और 1980 के दशक के प्रारंभ में संयुक्त राज्य अमेरिका में शैक्षणिक और पेशेवर महिलाओं के एक गठबंधन द्वारा आयोजित सम्मेलनों और कार्यशालाओं की

एक श्रृंखला से हुआ था।1974 में फ्रांस्वा डी'ऑबोन, जिन्होंने पर्यावरण-क्रांति लाने में महिलाओं की क्षमता की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए "पारिस्थितिक नारीवाद" शब्द गढ़ा था।फ्रांसीसी कट्टरपंथी नारीवादी फ्रांस्वा डी' ने अपनी पुस्तक "नारीवाद या मृत्यु"(1980) में दो अलग-अलग माने जाने वाले आंदोलनों: पारिस्थितिकी और नारीवाद को संश्लेषित करने के लिए किया था। उन्होंने महिलाओं और प्रकृति के वर्चस्व के बीच स्पष्ट अंतर संबंध देखें और उन्होंने उनको इकट्ठे कर कर देखा। उनको आशा थी की अपनी सक्रियता से धरती को विनाशकारी प्रभावों से बचाया जा सकता है और मुक्त किया जा सकता है। उनका यह भी माना था की महिलाओं और ग़रीबों का हास्य पर होना, प्राकृतिक वातावरण और गैर मानवीय दुनिया के व्यवस्थित क्षरण में उलझा हुआ कि नारीवाद और पर्यावरणवाद को महिलाओं और प्राकृतिक दुनिया के प्रति सम्मान को बढ़ावा देने के लिए कैसे जोड़ा जा सकता है। वे इस धारणा से समझते थे कि महिलाओं को प्रकृति से जोड़ने की एक लंबी ऐतिहासिक मिसाल ने दोनों के उत्पीड़न को जन्म दिया है। उनके अनुसार महिलाओं और प्रकृति को अक्सर अराजक, तर्कहीन और नियंत्रण की आवश्यकता वाली वस्तुओं के रूप में चित्रित किया जाता है, जबकि पुरुषों को अक्सर तर्कसंगत, व्यवस्थित। इस प्रकार उनको महिलाओं और प्रकृति के उपयोग और विकास को निर्देशित करने में सक्षम के रूप में चित्रित किया जाता है।

इस तरह बहुत पारिस्थितिक नारीवादियों का तर्क है कि इस व्यवस्था के परिणामस्वरूप एक पदानुक्रमित संरचना बनती है जो पुरुषों को शक्ति प्रदान करती है और उनको महिलाओं और प्रकृति के शोषण की अनुमति देती है, ख़ासकर जब दोनों एक-दूसरे से जुड़े हों। इस प्रकार, प्रारंभिक पारिस्थितिक नारीवादियों ने यह सुनिश्चित किया कि किसी भी वर्ग की दुर्दशा का समाधान करने के लिए दोनों की सामाजिक स्थिति को कम करना आवश्यक होगा। बेशक 1980 के दशक के अंत तक और 1990 के दशक की शुरुआत तक पारिस्थितिक नारीवाद ने नारीवाद को एक अलग शाखा के रूप में वास्तविक गति एवं जुड़ाव हासिल करना नहीं शुरू किया था लेकिन पारिस्थितिक नारीवाद पर सबसे अधिक एकेडमिक कार्यों में से मारिया मिस और वंदना शिवा की 1993 की पुस्तक "इकोफेमिनिज्म" है।

मीज़ और शिवा की पुस्तक पारिस्थितिक नारीवादी विचारधारा के ढाँचों को स्पष्ट रूप से परिभाषित और संरचित करने पर केंद्रित है:

"लेखन की प्रेरणा उन कारणों के विश्लेषण से मिली जिनके कारण पृथ्वी पर जीवन के लिए खतरा पैदा करने वाली विनाशकारी प्रवृत्तियाँ उत्पन्न हुईं। हम स्वतंत्र रूप से उस चीज़ से अवगत हुए जिसे हम पूँजीवादी पितृसत्तात्मक विश्व व्यवस्था कहते हैं।" उनका तर्क है कि, "यह व्यवस्था महिलाओं, 'विदेशी' लोगों और उनकी ज़मीनों के उपनिवेशीकरण के माध्यम से उभरी, बनी और बनी हुई है; और प्रकृति, जिसे यह धीरे-धीरे नष्ट कर रही है" (2014)

इस तरह यह कहा जा सकता है पारिस्थितिक नारीवाद एक ऐसा दर्शन और आंदोलन है, जो कि नारीवादी और पारिस्थितिक सोच के मिलन से उत्पन्न हुआ है। पारिस्थितिक नारीवाद उसे अवधारणा को समझता है जिसमें सामाजिक मानसिकता जो महिलाओं के वर्चस्व और उत्पीड़न की ओर ले जाती है, यह अवधारणा सीधे तौर पर उस सामाजिक मानसिकता से जुड़ी है जो पर्यावरण के दुरुपयोग की ओर ले जाती है। पारिस्थितिक नारीवाद का सिद्धांत व्यवहार की संबद्धता एवं संपूर्णता के बारे में है जो हर एक जीवित प्राणी की विशेष शक्ति एवं अखंडता पर जोर देता है।

पारिस्थितिक नारीवाद, नारीवाद, पर्यावरणवाद

पारिस्थितिक चेतना और नारीवादी चेतना के मिश्रण ने पारिस्थितिक नारीवाद का मार्ग प्रशस्त किया। **पारिस्थितिक नारीवाद** पर अध्ययन करने वाले विभिन्न लेखक हैं रोज़ मेरी रैडफोर्ड रुएथर, एरियल सलेह,वंदना शिवा, मैरी डेली, पेट्रा केली, क्लेरिसा पिंकोला एस्टेस, स्टेफ़नी काज़ा, मैरी ग्रे, रॉबिनवॉल किम्मेरर, हेलेन नॉरबर्ग-हॉज, एलीसन हेज कोक, वैलेरी एन कालैंड, अरुंधति रॉय,वांगारी मुता मथाई, लिन मार्गुलिस, बारबरा वॉकर और करेन जे. वॉरेन और कुछ जो सामाजिक पर्यावरण कार्यकर्ता, सामाजिक लेखक और राजनीतिक कार्यकर्ता हैं। पारिस्थितिक नारीवाद का यह मानना है की महिलाओं की नैतिकता पुरुषों की तुलना में पर्यावरण के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होती है और महिला व्यक्ति तब का अवमूल्यन भी करती है। इनका मानना है कि महिलाएं प्राकृतिक दुनिया का एक ऐसा प्रदर्शनकारी हिस्सा है जो की बचपन में भी और व्यवहार में भी प्रकृति का प्रदर्शन ही करती हैं वह प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर ही काम करती हैं, इसके विपरीत पुरुषों का प्रकृति के साथ एक पदानुक्रमित संबंध होता है। पारिस्थितिकी एक तंत्र के निर्माण में सभी सजीव और निर्जीव घटकों को सम्मान महत्व देती है। इस तरह नारीवाद सामाजिक व्यवस्था की संरचना में पुरुषों और महिलाओं की समानता पर प्रकाश डालता है। आज के समय में पारिस्थितिक और पर्यावरण चिंताएं मानव लिंग संबंधों के पहलूओं के क्षेत्र में और विशेष रूप से महिलाओं के जीवन एवं प्रकृति और वह औपनिवेशिक पितृसत्तात्मक प्रभुत्व के बीच अंतर क्रिया के भी बहुत महत्वपूर्ण मुद्दे बन गए हैं, इसलिए दोनों को समझने के लिए एक नारीवादी विश्लेषण की भी आवश्यकता है। पारिस्थितिकी नारीवादी विश्व समस्याओं के अहिंसक समाधानों को खोजते हैं।

पारिस्थितिक नारीवादियों का मानना है कि महिलाओं का दुख सार्वभौमिक है क्योंकि महिलाओं को यातना दी गई है और इसका अभ्यास अन्य सभी - नस्ल, बच्चों, जानवरों, पौधों, चट्टानों, पानी और हवा - के मनोवैज्ञानिक शोषण का ईंधन है।

नारीवाद महिलाओं की शक्ति और आवाज़ को दर्शाता है, वहीं दूसरी ओर यह समाज के उन सभी पहलूओं पर सवाल उठाता है जो हमारे जीवन, संस्कृति, परिवार और महिलाओं की परंपराओं को प्रभावित करते हैं। नारीवाद जो दुनिया भर की महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए प्रयास करता है, आज अपनी सबसे निर्णायक लड़ाई लड़ रहा है। हालाँकि महिलाओं के पक्ष में एक सैद्धांतिक सहमति है, लेकिन दूसरी ओर महिलाओं के अधिकारों का पूर्ण कार्यान्वयन परंपरा से बंधे समाज के जड़ जमाए वर्गों कड़ा प्रतिरोध करता है। नारीवादी दृष्टिकोण महिलाओं को आवाज़ और पहचान देने के लिए उनका बचाव करने की कोशिश करते हैं।

पारिस्थितिक नारीवाद हमें सिखाता है कि पितृसत्तात्मक व्यवस्था में महिलाओं और प्रकृति को समान दृष्टि से देखा जाता है। पारिस्थितिक नारीवाद कोई नई अवधारणा नहीं है। भारत में पारिस्थितिकी नारीवाद का स्वरूप चिपको आंदोलन और नर्मदा बचाओ आंदोलन जैसे प्रयासों में देखा गया जहां ग्रामीण महिलाएं पेड़ों और नदियों की रक्षा के लिए आगे आई। भारत में बिश्नोई जैसे आदिवासी समूह हमेशा से प्रकृति के करीब रहे हैं। वह लोग प्रकृति द्वारा प्रदान की गई चीज़ों का सम्मान करते हैं और उसे पुनर्स्थापित करने के लिए आंदोलनों का नेतृत्व करते रहे हैं। स्थानीय पर्यावरणवादी सुंदर लाल बहुगुना के सहयोग से ग्रामीण महिलाओं द्वारा चलाया गया प्रसिद्ध "चिपको आंदोलन" अपने

अनोखे विरोध के लिए जाना जाता था - पेड़ों से चिपके रहना, यह पारिस्थितिक नारीवाद के उदाहरण है। उत्तराखंड के पहाड़ी इलाकों में ग्रामीण महिलाओं ने जंगल की अंधाधुंध कटाई का विरोध करने के लिए पेड़ों से चिपक कर ठेकेदारों को रोका था।

बचनी और गौरा देवी ने 1970 के दशक में भारत के उत्तराखंड में पेड़ों को गले लगाने के आंदोलन का नेतृत्व किया था। उन्होंने पेड़ों को तब तक गले लगाकर उन्हें कटने से रोका जब तक कि लकड़हारे चले नहीं गए। इससे स्थानीय क्षेत्रों में भी काफी जागरूकता देखने को मिली और विरोध हुआ। यह आंदोलन ग्रामीण भारत के सबसे प्रभावशाली पारिस्थितिक नारीवादी आंदोलनों में से एक था। उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि जंगल केवल लकड़ी का स्रोत ही नहीं है बल्कि उनके जीवन, ईंधन, चारे एवं जल का भी आधार है। इस आंदोलन में वैश्विक स्तर पर पर्यावरणीय न्याय एवं स्त्री सशक्तिकरण का एक अच्छा उदाहरण दिया। 'नर्मदा बचाओ' आंदोलन में भी मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात में बड़े बांधों के खिलाफ आदिवासी महिलाएं और कार्यकर्ता सामने आए और उन्होंने यह दिखा दिया कि विकास योजनाओं के नाम पर कैसे प्रकृति एवं स्थानीय समुदायों का हनन किया जा रहा है। विशेषकर महिलाओं का शोषण हो रहा है। मेघा पाटकर के नेतृत्व में यह आंदोलन न केवल पर्यावरणीय न्याय बल्कि सामाजिक न्याय की मांग भी बन गया। इसके अतिरिक्त 'एपीको आंदोलन' कर्नाटक एवं दक्षिण भारत में जल, जंगल एवं जमीन की रक्षा के लिए स्त्रियों की भागीदारी को भी व्यावहारिक रूप से सामने लाता है।

इसके साथ ही राजस्थान में खेजड़ली आंदोलन का भी यही लक्ष्य था, वहां के ग्रामीण लोगों ने राज्य में व्यावसायिक व्यवस्थाएँ स्थापित कर रही सरकार से लकड़ी काटने के उपकरण छीन लिए।

इसके साथ ही वंदना शिवा पर्यावरण आंदोलनों का नेतृत्व करने वाली महिलाओं की सुंदरता और शक्ति को अपने इस कथन में समेटती हैं: "या तो हमारा भविष्य ऐसा होगा जहाँ महिलाएँ पृथ्वी के साथ शांति स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त करेंगी, या फिर हमारा कोई मानवीय भविष्य ही नहीं होगा।"

नारीवाद अवधारणा के अनुसार भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक लोकाचार महिलाओं की विचार की स्वायत्तता को नकारता है। यह महिला की पहचान को निकलता है, इसका विरोध नारीवादी दृष्टिकोण करता है अलग-अलग लोगों की अलग-अलग राय होती है। यह है एक राजनीतिक आंदोलन का सामाजिक सिद्धांत है जो स्त्रियों के अनुभवों से जन्मा है। नारीवादी विद्वान लैंगिक असमानता और महिलाओं के अधिकार इत्यादि को मुख्य मुद्दा बनाते हैं। नारीवादी सिद्धांत का मुख्य उद्देश्य लैंगिक समानता की प्रकृति एवं कर्म को समझना एवं इसके फल स्वरूप पैदा होने वाले लैंगिक भेदभाव की राजनीति और शक्ति संतुलन के सिद्धांतों पर इसके असर की व्याख्या करना भी होता है। नारीवाद पितृसत्तात्मक समाज के विरुद्ध खड़ा होने वाला एक आंदोलन है। हालांकि महिलाओं की स्वतंत्रता की चिन्ता को लेकर सभी नारीवादी एक दूसरे से जुड़े हुए हैं लेकिन इन अन्यायों की जांच करने के समाधान के लिए उन्होंने अलग-अलग सुझाव पेश किए हैं जिसे एक समान समाज की स्थापना की जा सके (कोलिन, 2004)।

नारीवादी दृष्टिकोण निम्नलिखित विभिन्न प्रकारों में विभाजित है:

- उदारवादी नारीवाद:- प्रथम चरण के नारीवादी उदारवादी रहे हैं। उदारवादी नारीवाद फ्रांस की क्रांति द्वारा प्रेरित था और आत्मज्ञान के विज्ञान पर आधारित था और इनका विचार यह था कि सब मानव ईश्वर द्वारा एक समान बनाए गए हैं। उदारवादी नारीवाद महिलाओं के लिए समानता, अर्थात समान अधिकार और कर्तव्य चाहता है। लेकिन इसके साथ ही यह सांस्कृतिक पहलूओं या उन संस्थाओं पर ज़ोर नहीं देता जो सरकार से अलग हैं। यह कभी-कभी कट्टरपंथी नारीवाद के साथ तुलना में होता है। 1792 में मेरी वाल स्टोन क्राफ्ट की पुस्तक " ए वाइंडिकेशन ऑफ़ द राइट्स ऑफ़ वीमेन" आई जिसने नारी के अधिकारों के प्रति जागरूकता पैदा की और महिलाओं के अधिकार एवं स्वतंत्रता के लिए क्रमबद्ध तरीके से शुरुआत की। उसने इस बात का खंडन किया की प्रकृति ने स्त्री को पुरुष की दासी बनाया है। उसने तर्क दिया कि स्त्रियों को भी उपयुक्त शिक्षा दी जाए पूर्ण नागरिक अधिकार प्रदान किए जाएं और कानूनी तौर पर उन्हें अपने पति से स्वाधीन माना जाए। जॉन स्टुअर्ट मिल ने भी स्त्रियों को पुरुषों के समान राजनीतिक एवं सामाजिक अधिकार देने की पेशकश की थी। इसके बाद बहुत सारी किताबें और भी लिखी गई।
- कट्टरपंथी नारीवाद:- कट्टरपंथी नारीवाद का यह दृष्टिकोण सामाजिक सुधारों, सामाजिक परिवर्तनों और यहाँ तक कि क्रांति पर भी केंद्रित है। उग्र अर्थात कट्टरपंथी नारीवाद का उदय अमेरिका में 1960 के अंतिम दशक में हुआ, फिर यह इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया पहुंचा। उन्होंने महिलाओं के दमन और शोषण के विभिन्न पहलूओं पर जागरूकता फैलाने अथवा उनसे निजात पाने के लिए राजनीतिक एवं रणनीतिक उपाय बताए। यह पितृ सत्ता, नस्लवाद जैसी संस्थाओं के पक्ष में तर्क देता है। यह दृष्टिकोण जैविक द्वैधीकरण की निंदा करता है कि लिंग एक सामाजिक संरचना है। यह दृष्टिकोण कभी-कभी अलगाववादी नारीवाद और समाजवादी नारीवाद जैसी और शाखाएं के लिए भी मार्ग प्रशस्त करता है। कभी-कभी यह अलगाववादी नारीवाद और समाजवादी नारीवाद जैसी अन्य शाखाओं के लिए मार्ग प्रशस्त करता है। यह महिलाओं की पुरुषों पर निर्भरता को दूर करना चाहता है। 1953 में, प्रसिद्ध अंग्रेजी फ्रांसीसी अनुवादक, साइमन डी ब्यूवोइर की 'द सेकंड सेक्स' (1949), महिला मुक्ति आंदोलन पर एक बड़ा प्रभाव साबित हुई। वह एक दूरगामी नारीवादी थी जिन्होंने अपनी पुस्तक के माध्यम से पितृ सत्ता पर जोरदार तर्क दिया, जिसने महिलाओं को हाशिए पर रहने के लिए मजबूर किया। इसी युग में फायर स्टोन ने अपनी चर्चित पुस्तक 'द डायलेक्टिक का सेक्स' के अंतर्गत नारीवाद की एक नई व्याख्या को दिया और नारीवाद आंदोलन को एक नई दिशा प्रदान की। इसी के साथ झूला स्मिथ ने संकेत किया की नारी की पराधीनता को प्रभुत्व की किसी विस्तृत प्रणाली का हिस्सा या लक्षण मानकर नहीं समझा जा सकता। स्त्रियों की प्रधानता एक ऐसा संकल्पनात्मक प्रतिरूप प्रस्तुत करती है जिसके आधार पर समाज में सभी तरह के उत्पीड़नों का विश्लेषण किया जा सकता है।
- सांस्कृतिक नारीवाद:- सांस्कृतिक नारीवाद प्रतिस्पर्धी महिला शक्ति संरचनाओं, संस्कृतियों और समान सामाजिक मानदंडों की स्थापना पर प्रकाश डालता है। सांस्कृतिक नारीवाद परिवार में शक्ति संबंधों और

समावेशन के विघटन का तर्क देता है। यह नारीवादी आंदोलन के प्रमुख लक्ष्य के रूप में समानता से आगे जाने का प्रयास करता है।

- समाजवादी नारीवाद:-सामाजिक नारीवाद समाज में महिलाओं को सौंपी गई भूमिकाओं में रुचि दिखाता है। सामाजिक नारीवाद साहित्यिक ग्रंथों में महिलाओं की प्रस्तुति के संदर्भ पर अध्ययन पर भी ध्यान केंद्रित करता है। इसलिए इसके प्रतिपादक नारीवादी समाज के उन पहलूओं और परंपराओं पर प्रकाश डालते हैं जिन्हें समाज में महिलाओं की स्थिति को फिर से परिभाषित करने के लिए फिर से प्रस्तुत किया जाना चाहिए।सामाजिक नारीवाद के समर्थक सामाजिक रीति-रिवाजों का पुनर्निर्माण करना चाहते हैं। बहुत सारे समाजवादी लेखन ने नारीवादी मुद्दे उठाए उदाहरण के लिए फ्यूरियर, राबर्ट ओबन, फ्रेडरिक एंगल्स, एन व्हीलर इत्यादि।
- मार्क्सवादी नारीवाद:- मार्क्सवादी नारीवाद दमन की तुलना में उत्पीड़न में अधिक रुचि दिखाता है, यह सभी साहित्यिक ग्रंथों को एक पहचानने योग्य मार्क्सवादी तरीके से संपादित करता है। मार्क्सवादी नारीवादी अवसर आने पर इन सब में से कुछ न कुछ करते हैं।मार्क्सवादी नारीवाद के प्रतिपादक पूँजीवाद को एक वर्ग व्यवस्था के भौतिक आधार के रूप में पहचानते हैं, जो महिलाओं को उत्पीड़ित बनाती है और उनकी सभी इच्छाओं को दबा कर रखती है। वे मानते हैं कि समाज में महिलाओं का दमन ही समाज के आर्थिक पतन का मुख्य कारण है। नारीवादियों के ये समूह पूँजीवाद में विश्वास करते हैं, जबकि कट्टरपंथी नारीवादी पूँजीवाद में विश्वास नहीं करते। इसलिए, नारीवाद समग्र रूप से समाज की भलाई से संबंधित है, न केवल महिलाओं की समस्याओं पर ध्यान आकर्षित करता है, बल्कि वर्तमान सामाजिक समस्याओं को भी उजागर करता है और समाज से सभी समस्याओं को दूर करने का अथक प्रयास करता है।
- पारिस्थितिकी नारीवाद/ पर्यावरण नारीवाद: इसी दौर में सांस्कृतिक नारीवाद नाम से विचार संप्रदाय उभर कर आया जो महिला एवं पुरुष के बीच के अंतर को बखूबी बयान करता है इस श्रेणी में वंदना शिवा जैसी पर्यावरण नारीवादी भी मिलती हैं जिन्होंने प्रजनन, पालन पोषण, सम पोषण, जड़ से जुड़े रहना जैसे शायद महिलाओं को पुरुषों से बेहतर और अलग बनाते हैं। पर्यावरण नारीवादी यह मानते हैं कि महिलाओं को अपने लैंगिक गुना पर गर्व करना चाहिए और अपने आप को एक अपराधी मानने की बजाय एक करता मानना चाहिए।

नारीवाद की लहरें

नारीवाद एक सामाजिक, राजनीतिक एवं बौद्धिक आंदोलन है जिसका मुख्य उद्देश्य महिलाओं को सम्मान अधिकार दिलवाना, पितृसत्तात्मक समाज संरचना को चुनौती देना, और लैंगिक समानता को स्थापित करना है नारीवादी आंदोलन समय के साथ-साथ अलग-अलग लहरों के रूप में विकसित हुआ है। प्रत्येक लहर की अपनी विशिष्टता और विशेष रणनीति रही है जो कि इस प्रकार है:

- पहली लहर (19वीं शताब्दी से प्रारंभिक 20वी शताब्दी तक): पहले लहर का केंद्र बिंदु महिलाओं को कानूनी एवं राजनीतिक अधिकार दिलवाना था। इस दौर में महिलाएं मताधिकार संपत्ति रखने का अधिकार एवं शिक्षा अवसर पाने के लिए संघर्ष कर रही थी। यह आंदोलन ख़ासकर अमेरिका एवं यूरोप में सक्रिय रहा हालांकि इसका नेतृत्व मध्य एवं उच्च वर्गीय महिलाओं ने किया लेकिन यह लहर लैंगिक समानता के लिए ऐतिहासिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण स्थापित हुई जबकि इसमें केवल सीमित वर्ग की महिलाओं की आवाज शामिल थी।
- दूसरी लहर (1960 से 1980 तक): दूसरी लहर ने नारीवाद को केवल कानूनी अधिकारों से आगे बढ़कर सामाजिक एवं सांस्कृतिक असमानताओं की ओर भी मोड़ दिया। इस लहर में रोजगार के समान अवसर, समान वेतन, प्रजनन अधिकार, घरेलू हिंसा एवं यौन शोषण के खिलाफ संघर्ष प्रमुख मुद्दे बने और इसका प्रमुख नारा 'The personal is political' था। इसका मतलब था कि परिवार और विवाह जैसे नीति मुद्दे भी सामाजिक राजनीतिक संरचना से जुड़े हुए हैं इसी दौर में पर्यावरण नारीवाद अर्थात पारिस्थितिकी नारीवाद का उदय हुआ जिसने स्त्री और प्रकृति के शोषण के रिश्ते को भी उजागर किया।
- तीसरी लहर (1990-2000) : नारीवाद की तीसरी लहर ने विविधता एवं पहचान पर जोर दिया। इस दौर में नारीवाद ने यह स्वीकार किया कि सभी महिलाएं एक जैसी नहीं होती, सभी महिलाओं के अनुभव जाति, नस्ल, वर्ग, धर्म एवं यौनिकता इत्यादि के आधार पर अलग-अलग होती हैं। इस लहर ने सौंदर्य मानकों एवं स्त्री देह के वस्तुकरण का भी विरोध किया। इसके साथ ही LGBTQ समुदाय की समस्याओं को भी अपने दायरे में शामिल किया।
- चौथी लहर (वर्तमान तक): नारीवाद की चौथी लहर डिजिटल तकनीक और सोशल मीडिया से जुड़ी हुई है। इसका मुख्य केंद्र बिंदु यौन उत्पीड़न, कार्य स्थल पर भेदभाव एवं लैंगिक हिंसा के खिलाफ वैश्विक स्तर पर एकजुट होना है। #Me Too जैसे आंदोलन ने इस लहर को एक अंतरराष्ट्रीय पहचान प्रदान की और इसके अलावा ही ट्रांसजेंडर अधिकार, बॉडी पॉजिटिविटी एवं इंटरसेक्शनैलिटी, वातावरण न्याय जैसे मुद्दे भी इस लहर का हिस्सा बने। इस लहर में नारीवाद ने स्त्री आंदोलन को एक नई तकनीक एवं वैश्विक सहयोग से जोड़कर और भी अधिक सशक्त एवं समावेशी बना दिया।

शोध के उद्देश्य

इस शोध पत्र का उद्देश्य साहित्यिक शोध के एक उभरते सिद्धांत के रूप में

- पारिस्थितिक नारीवाद का एक

व्यापक अध्ययन प्रस्तुत करना।

- पारिस्थितिक नारीवाद की उत्पत्ति और विकास को भी स्पष्ट करना।
- पारिस्थितिक नारीवाद के सिद्धांतों और समर्थकों पर भी प्रकाश डालना।

शोध की कार्यप्रणाली

यद्यपि विभिन्न विषयों में पारिस्थितिक नारीवादी विश्लेषण प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, फिर भी पारिस्थितिक नारीवाद का व्यापक अध्ययन करने वाला शोध पत्र बहुत कम है। इसलिए, पारिस्थितिक नारीवाद से संबंधित पुस्तकों और लेखों का विस्तृत विश्लेषण करके पारिस्थितिक नारीवाद और उसके सिद्धांतों का एक सैद्धांतिक और वैचारिक ढाँचा प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। यह एक समीक्षा पत्र है और इसमें प्रमुख रूप से पारिस्थितिक द्वितीय स्रोतों का विश्लेषण किया है। इसके अलावा, पारिस्थितिक नारीवाद के उद्भव को समझने के लिए यह पत्र पर्यावरण न्याय आंदोलन और नारीवाद पर प्रकाश डालेगा।

पारिस्थितिकी नारीवाद की चुनौतियां

पारिस्थितिकी नारीवाद ने स्त्री और पर्यावरण के बीच के संबंधों को समझने के लिए एक नई दृष्टि प्रदान की है लेकिन फिर भी इसके समक्ष कई सैद्धांतिक सामाजिक आर्थिक और व्यावहारिक चुनौतियां आई जो कि इस प्रकार हैं:

- **सामाजिक चुनौतियां:** भारत में पितृसत्तात्मक संरचना का दबाव पाया जाता है। यह दबाव ग्रामीण एवं आदिवासी महिलाओं पर ज्यादा देखने को मिलता है। इसलिए ग्रामीण या आदिवासी महिलाओं के प्रयासों को अक्सर ही मुख्य धारा समाज या प्रशासन महत्वहीन करार दे देता है। लैंगिक असमानता के कारण कई समाजों में महिलाओं की आवाज को राजनीतिक एवं कानूनी मंचों पर पर्याप्त स्थान नहीं मिलता जिसके कारण पर्यावरण मुद्दों पर महिलाओं का दृष्टिकोण हाशिए पर रह जाता है।
- **आर्थिक चुनौतियां:** भारत एक विकासशील देश है। यहां पर विकास के लिए बड़े बांध, खनन एवं औद्योगीकरण जैसी परियोजनाएं सरकार और पूँजीपतियों के लिए प्रगति का प्रतीक हो सकती हैं लेकिन स्थिति की नारीवाद इस विनाशकारी मानता है और इस संघर्ष में महिलाओं की आवाज दबा दी जाती है। इसका कारण एक यह भी है कि ग्रामीण महिलाएं अक्सर ईंधन, पानी, चारा पर सीधे निर्भर होती हैं और पर्यावरण में विनाश का सबसे अधिक भोज इन पर ही आता है लेकिन उनके पास वैकल्पिक साधनों की भी कमी हो जाती है।
- **राजनीतिक चुनौतियां:** भारत में अक्सर देखा गया है कि अधिकांश नीतियां आर्थिक विकास को ही पल देती हैं दूसरी ओर पर्यावरणीय न्याय और लैंगिक समानता को समान महत्व नहीं मिलता। इसके साथ ही वैश्वीकरण का दबाव भी देखा जाता है क्योंकि वह राष्ट्रीय कंपनियों एवं मुकुट बाजार नीतियां प्राकृतिक संसाधनों के दोहन को बढ़ावा देती हैं। पारिस्थितिकी नारीवाद इन प्रवृत्तियों का जब विरोध करता है तो वह दबकर रह जाता है क्योंकि राजनीतिक आर्थिक ताकतें ज्यादा शक्तिशाली होती हैं।

- **सैद्धांतिक चुनौतियां:** पारिस्थितिकी नारीवाद में अक्सर स्त्रियों को प्रकृति से सहज रूप से जोड़े जाने के कारण आलोचना का शिकार होना पड़ता है। यह भी तर्क दिया जाता है, कि सारी महिलाएं समान रूप से पर्यावरण के प्रति संवेदनशील नहीं होती। प्रारंभिक नारीवाद ज़्यादातर यूरोपीय और अमेरिकी अनुभवों पर आधारित था, जिससे यह भी आरोप लग जाता है कि यह विकासशील देशों की वास्तविक जरूरतों को पर्याप्त रूप से नहीं दर्शाता। सारे नारीवाद आंदोलन में आंतरिक मतभेद के कारण इनकी एकजुट कमजोर पड़ती दिखाई देती है।

इस कहा जाता है कि पारिस्थितिकी नारीवाद पर्यावरणीय संकट एवं लैंगिक असमानता दोनों का समाधान खोजने का प्रयास करता है लेकिन इसको बहुत सारी चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है।

पारिस्थितिकी नारीवाद की चुनौतियों के समाधान एवं संभावनाएं

पारिस्थितिकी नारीवाद की चुनौतियां गंभीर है लेकिन इनका समाधान असंभव नहीं। शिक्षा, नीतियों के सुधार, स्थानीय भागीदारी एवं वैश्विक सहयोग से इसको अत्यधिक व्यावहारिक एवं प्रभावशाली बनाया जा सकता है अगर इसको सैद्धांतिक विमर्श ना मानकर एक सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक ढांचे में अपनाया जाए तो यह न केवल महिलाओं की मुक्ति का साधन बनेगा बल्कि धरती माता की रक्षा एवं सतत विकास का आधार बनेगा।

- सामाजिक समाधान: पारिस्थितिकी नारीवाद को बढ़ावा देने के लिए स्थानीय स्तर पर निर्णय लेने वाली संस्थाओं जैसे कि ग्राम सभा पंचायत और नगर समिति में महिलाओं की भूमिका को मजबूत करना चाहिए। इसके साथ ही लड़कियों और महिलाओं को पर्यावरण शिक्षा से जोड़कर जागरूकता बढ़ानी चाहिए। महिलाओं और पुरुषों को साथ लेकर सामुदायिक स्तर पर टिकाऊ विकास की पहल करनी चाहिए, समुदाय आधारित आंदोलन चलाने चाहिए।
- आर्थिक समाधान: पारिस्थितिकी नारीवाद को आर्थिक विकास के साथ जोड़कर चलना चाहिए एवं विकास की ऐसी योजनाएं बननी चाहिए जो पर्यावरण एवं समाज दोनों के लिए लाभकारी हो। महिला केंद्रित अर्थव्यवस्था होनी चाहिए जिसमें वैकल्पिक रोजगार उपलब्ध कराए जाएं। जल, जमीन, एवं जंगल, पर स्थानीय समुदायों विशेषकर महिलाओं को प्राथमिक अधिकार देना चाहिए।
- राजनीतिक समाधान: सरकार को ऐसी नीतियां बनानी चाहिए जो पर्यावरण में न्याय एवं लैंगिक समानता को साथ लेकर चलें। महिलाओं और पर्यावरण दोनों के अधिकारों को सुरक्षित करने वाले कानून का शक्ति से पालन करना चाहिए। इसके साथ ही वैश्विक सहयोग प्राप्त करने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एकोफेमिनिज्म के सिद्धांतों को शामिल करना चाहिए।
- सैद्धांतिक समाधान: पारिस्थितिकी नारीवाद को केवल नारीवाद या पर्यावरण में विचार विमर्श तक ही कीमत नहीं रखना चाहिए बल्कि और विषयों के साथ 20 को जोड़ना चाहिए। भारत को पश्चिमी संदर्भों पर आधारित न रहकर अपने देश के आदिवासी एवं ग्रामीण अनुभवों को महत्व देना चाहिए।

- वैचारिक समाधान: पारिस्थितिकी नारीवाद को केवल भावनात्मक या आध्यात्मिक विमर्श तक सीमित न रखकर ठोस नीतियों और कार्यक्रमों से जोड़ना चाहिए। पारिस्थितिकी नारीवाद को अन्य नारीवादी धाराओं के साथ स्थापित करके एक व्यापक आंदोलन का रूप देना चाहिए।

निष्कर्ष

पारिस्थितिक नारीवाद एक अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण है जो कि महिलाओं के उत्पीड़न एवं प्रकृति के क्षरण के बीच के संबंध को समझने का प्रयास करता है। यह न केवल एक अवधारणा है बल्कि सामाजिक और पर्यावरणीय सक्रियता का माध्यम भी है।

यह विचारधारा पितृसत्तात्मक संरचना को चुनौती देता है जिससे महिलाओं के अधिकारों एवं परिस्थित स्थिरता दोनों में सुधार संभव होता है। इस क्षेत्र में बहुत सारे विद्वानों जैसे कि फ़्राँसोइस डेओबॉने, वंदना शिवा, और कैरन वॉरेन ने सिद्धांत और व्यवहार को मिलाकर दिखाया है कि लैंगिक असमानता और पर्यावरणीय क्षरण परस्पर जुड़े हुए हैं। पारिस्थितिक नारीवाद पश्चिमी दार्शनिक सोच को चुनौती देते हुए, देखभाल, सहयोग और समग्र दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है। आज के युग में जलवायु परिवर्तन जैविक विभिन्नता का नुकसान और सामाजिक अन्याय के सामने पारिस्थितिक नारीवाद केवल एक सैद्धांतिक ढांचा ही नहीं है बल्कि यह एक व्यवहारिक दृष्टिकोण भी है जो की महिला सशक्तिकरण, पर्यावरणीय न्याय, सतत विकास को एक साथ आगे बढ़ाने में सहायता करता है।

पुस्तक एवं संदर्भ सूची

- Atwood, M. (2011). The handmaid's tale. Vintage.
- Biehl, J. (1991). Rethinking ecofeminist politics. South End Press.
- Birke, L. (1986). Women, feminism, and biology: The feminist challenge. Harvester Press.
- Birkeland, J. (1993). Ecofeminism: Linking theory and practice. In G. Gaard (Ed.), Ecofeminism: Women, animals, nature (pp. 13–59). Temple University Press.
- Bigwood, C. (1991). Earth muse: Feminism, nature, and art. Temple University Press.
- Buckingham, S. (2004). Ecofeminism in the twentieth century. The Geographical Journal, 170(2), 146–154.
- Caputi, J. (2007). Green consciousness: Earth based myth and meaning. Ethics and the Environment, 12(2), 23–44.
- D'Eaubonne, F. (1974). Le féminisme ou la mort. Paris: Pierre Horay.
- D'Eaubonne, F. (1980). Feminism or death. In E. Marks & I. de Courtivron (Eds.), New French feminisms. Schocken Books.
- Davion, V. (1994). Is ecofeminism feminist? In K. J. Warren (Ed.), Ecological feminism (pp. 8–28). Routledge.

- Diamond, C. (2017). Four women in the words: An ecofeminist look at the forest as home. Comparative Drama, 51(1), 71–100.
- Evans, R. (2015). James Tiptree Jr: Rereading essentialism and ecofeminism in the 1970s. Women's Studies Quarterly, 43(3), 223–239.
- Filippone, C. (2013). Ecological systems thinking in the work of Linda Stein. Woman's Art Journal, 34(1), 13–20.
- Gaard, G. (Ed.). (1993). Ecofeminism: Women, animals, nature. Temple University Press.
- Gaard, G. (2015). Ecofeminism and climate change. Women's Studies International Forum, 49, 20–33.
- Glotfelty, C., & Fromm, H. (Eds.). (1996). The ecocriticism reader: Landmarks in literary ecology. University of Georgia Press.
- Gross, M. R. (2011). Buddhism and ecofeminism: Untangling the threads of Buddhist ecology and Western thought. Journal for the Study of Religion, 24(2), 17–32.
- Hubben, K. (2013). Animals and the unspoken: Intertwined lives in Martha Sandwall-Bergström's Kulla-Gulla series. Barnboken, 36(1), 1–15.
- Lahar, S. (1991). Ecofeminist theory and grassroots politics. Hypatia, 6(1), 28–47.
- Maathai, W. (1992). Kenya's Green Belt Movement. UNESCO Courier, 45(3), 9–14.
- Merchant, C. (1980). The death of nature: Women, ecology, and the scientific revolution. HarperOne.
- Merchant, C. (1990). Ecofeminism and feminist theory. In I. Diamond & G. F. Orenstein (Eds.), Reweaving the world: The emergence of ecofeminism (pp. 100–105). Sierra Club Books.
- Mies, M., & Shiva, V. (1993). Ecofeminism. Zed Books.
- Moore, N. (2015). The changing nature of eco/feminism: Telling stories from Clayoquot Sound. UBC Press.
- Neilson, T. (2023, March 8). Ecofeminism. In Philosophy, Ecology, Feminism & Feminist Theory. University of Glasgow.
- Öztürk, Y. M. (2020). An overview of ecofeminism: Women, nature and hierarchies. Journal of Academic Social Science Studies, 81, 705–714.
- Plumwood, V. (2002). Feminism and the mastery of nature (1st ed.). Taylor & Francis.
- Rainey, S. A., & Glenn, S. J. (2009). Grassroots activism: An exploration of women of color's role in environmental justice movement. Race, Gender & Class, 16(3/4), 144–173.

- Shiva, V. (1988). Staying alive: Women, ecology and survival in India. Women Unlimited.
- Shiva, V. (2005). बीजों की राजनीति \[Politics of seeds]. पुस्तक प्रकाशन.
- Sturgeon, N. (1997). The nature of race: Discourses of racial difference in ecofeminism. In K. J. Warren (Ed.), Ecofeminism: Women, culture, nature (pp. 260–278). Indiana University Press.
- Tallmadge, J., & Henry, H. (2000). Introduction. In Reading under the sign of nature: New essays in ecocriticism (pp. 1–14). University of Utah Press.
- Twine, T. R. (2001). Ecofeminism in process. Hypatia, 15(3), 120–126.
- Warren, K. J. (Ed.). (1994). Ecological feminism. Routledge.
- Warren, K. J. (2000). Ecofeminist philosophy: A western perspective on what it is and why it matters. Rowman & Littlefield.
- Warren, K. J. (Ed.). (1997). Ecofeminism: Women, culture, nature. Indiana University Press.